Roll No. : .....

Total No. of Questions : **13**] [Total No. of Printed Pages : **3**

ED–3033

B.A. B.Ed. (IIIrd Year) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - II (CC-1)

कथा साहित्य

(कहानी और उपन्यास)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **60***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 8 = 16)**

नोट :– सभी **आठ** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 4 × 5 = 20)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **4** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 8 × 3 = 24)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) 'त्यागपत्र' उपन्यास की कथावस्तु पर टिप्पणी लिखिए।

   (ii) 'त्यागपत्र' उपन्यास में प्रमोद ने जजी से त्यागपत्र क्यों दिया था ?

   (iii) मुंशीजी ने मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा है ?

(iv) उपन्यास एवं कहानी में कोई **दो** अन्तर लिखिए।

(v) रेहान हिन्दुओं को गाली क्यों दिया करता था ?

(vi) 'दु:ख' कहानी के शीर्षक पर टिप्पणी लिखिए।

(vii) 'चीफ की दावत' कहानी की संवाद योजना पर प्रकाश डालिए।

(viii) दादी माँ बाहर से कठोर किंतु भीतर से नरम हृदय की महिला थी। स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–ब

सात में से किन्हीं **पाँच** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

2. दद्दा ने उसे सीने से लिपटा लिया। सफेद मलमल के जम्पर से उठती खुशबू में इसे भैया की महक आती लगी। दद्दा की आवाज दूर आती सुनाई पड़ी, ''सुरैया का गम इसे घुन की तरह चाट गया''। घुन तो गेहूँ में लगता है, खलिकुन गेहूँ साफ करते हुए यही शिकायत करती थी। नरगिस को याद आया घुन का चाटा खोखला गेहूँ का दाना।

   दद्दा के सीने से मुँह हटाकर इसने भैया की तरफ देखा, ''तो क्या सुरैया आपा घुन थी।''

3. बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य इन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गईं, और क्षण भर में ही सारा नशा हिरन होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों की त्यों बैठी थी मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए, और सिर दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ झूल रहा था और मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही थी। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते। और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दाएँ से बाएँ झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।

4. उन्होंने संदूक खोलकर एक चमकती सी चीज निकाली, ''तेरे दादा ने ये कंगन मुझे इसी दिन के लिए पहनाया था।'' इनका गला भर गया, ''मैंने इसे पहना ही नहीं, सहेजकर रखती आई है।'' ये इनके वंश की निशानी है। उन्होंने आँसू पोंछकर कहा, ''पुराने लोग आगा पीछा सब सोच लेते थे, बेटा।''

5. इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है, मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो, अवसर को देखो, इसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरज वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है, लेकिन बेगरज को दांव पर पाना जरा कठिन है, इन बातों को निगाह में बाँध लो ये मेरी जन्म भर की कमाई है।

6. आठ पैसे का खोमचा बेचने जो इस सर्दी में निकला है, इसके घर की क्या अवस्था होगी, ये सोचकर दिलीप सिहर उठा। इसने जेब से एक रुपया निकालकर लड़के की थाली में डाल दिया। रुपये की खनखनाहट से वह सुनसान रात गूँज उठी। रुपये को देख लड़के ने कहा–''मेरे पास तो खुल्ले पैसे नहीं हैं।''

7. पं. अलोपीदीन ने हँसकर कहा, "हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं ? ये हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था।" वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नई उमंग थी। कड़ककर बोले, "हम इन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं।"

8. नहीं बेटा, अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहे रहो। मैंने अपना खा-पहन लिया। अब यहाँ क्या करूँगी, जो थोड़े दिन जिन्दगी के बाकी हैं, भगवान का नाम लूँगी। तुम मुझे हरिद्वार भेज दो।

   तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा ? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है। तुम मुझे धोखा देके यूँ चली जाओगी ? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी ?

खण्ड–स

9. कहानी किसे कहते हैं ? इसकी परिभाषा देते हुए तत्वों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

10. कहानी के तत्वों के आधार पर 'नौकरीपेशा' कहानी की समीक्षा कीजिए।

11. उपन्यास का अर्थ स्पष्ट करते हुए किन्हीं **पाँच** उपन्यासकारों का परिचय दीजिए।

12. 'त्यागपत्र' की कहानी मृणाल की अंतरमनोवेदना की कहानी है। स्पष्ट कीजिए।

13. उपन्यास के तत्वों के आधार पर 'त्यागपत्र' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।